JK LAKSHMI CEMENT

एक कदम खुशियों भरे जीवन की ओर

सामग्री सूची

01
परिचय

03
संदेश
श्रीमति विनीता सिंघानिया,
वीसी और एमडी, जे के लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड

04
परियोजना क्षेत्र

05
सीएसआर कार्य के प्रमुख क्षेत्र

07-11
आरोग्य (स्वास्थ्य)

12
जल और स्वच्छता - स्वजल परियोजना

13
पर्यावरण

14-17
शिक्षा (विद्या)

18-20
आजीविका

21
संस्कृति - परियोजना मुस्कान

22
आपातकाल के दौरान सामुदायिक आवश्यकताओं के लिए उठाये गए कदम - कोविड-19 से बचाव के प्रयास

23-24
पुरस्कार और सम्मान

25
सरकारी साझेदारी

26
संपर्क संबंधित जानकारी

जे के लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड
एक बुलंद सोच

जे के लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड की स्थापना वर्ष 1982 में एक ऐसे औद्योगिक क्षेत्र में हुई थी जहां कोई औद्योगिक गतिविधि नहीं संचालित थी और वह सघन आदिवासी आबादी क्षेत्र था। हमारे आदरणीय एवं प्रिय प्रबंध निदेशक स्वर्गीय श्री श्रीपति सिंघानिया ने इस बंजर क्षेत्रीय परिवेश में औद्योगिक विकास के लिए सीमेंट प्लांट लगाने का निर्णय लिया।

अपनी स्थापना के बाद से ही जेकेएलसी इस क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में सहायक रहा है। हमने रोजगार सृजन, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण स्तर पर मूलभूत सुविधाओं के विकास, क्षमता निर्माण, प्राकृतिक आपदाओं और आपात स्थितियों में बचाव और राहत आदि सभी क्षेत्रों में योगदान दिया है। एक नियोक्ता के रूप में, हमने लगभग 80 प्रतिशत स्थानीय आबादी को हमारे अर्ध-कुशल और अकुशल श्रमिक वर्ग में भर्ती करना सुनिश्चित किया है, जिससे कि इस क्षेत्र की आबादी को बहुत आवश्यक सहायता मिली है। यह उपलब्धि हासिल करने वाले हम राजस्थान के एकमात्र सीमेंट प्लांट हैं।

अब जब हम अपनी स्थापना के लगभग 40 वर्ष पूरे कर रहे हैं, हम मज़बूती, गुणवत्ता, कार्य संपादन और सामाजिक जिम्मेदारियों के लिए प्रतिबद्ध हैं। सीएसआर पिंडवाड़ा, सिरोही, राजस्थान में जेकेपुरम सीमेंट प्लांट के आसपास के गांवों के समग्र विकास के लिए काम करता है।

जे के लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड
कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी

जीवन बदल रहा है!

श्रीमति विनीता सिंघानिया,
वाइस चेयरपरसन और प्रबंध निदेशक,
जे के लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड

सदेंश

जे के ग्रुप के संस्थापक ने एक सदी पहले ही समाज को वापस लौटाने के अपने दर्शन को संस्था में समाहित किया था। समाज के वंचित वर्ग के सामाजिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक समावेशी समुदाय का निर्माण करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

जे के लक्ष्मी सीमेंट अपने व्यापार और सामाजिक विकास की प्राथमिकताओं पर समान रूप से ध्यान देता है। स्वास्थ्य, पानी और स्वच्छता, शिक्षा, आजीविका, कौशल सुधार, पर्यावरण और सामुदायिक विकास के क्षेत्रों में निवेश के माध्यम से कंपनी पड़ोसी समुदाय के लोगों की जीवन गुणवत्ता में एक स्थायी परिवर्तन लाने का प्रयास करती है।

पड़ोसी समुदाय, विशेष रूप से आदिवासी बहुल आबादी क्षेत्र में उच्च शिशु और मातृ मृत्यु दर को कम करने के लिए 2004 में हमने नया सवेरा नाम से परियोजना को शुरू किया। हमने 10 गांवों से शुरुआत की थी और आज 80,000 लोगों की सेवा करते हुए 35 गांवों और 54 फलियों तक विस्तार किया है। इन वर्षों में, इस परियोजना ने शिशु और मातृ मृत्यु दर, दोनों को काफी कम करने में योगदान दिया है और आबादी के सबसे कमजोर समूह के स्वास्थ्य की स्थिति में एक बड़ा बदलाव लाया गया है।

प्रौढ़ साक्षरता परियोजना ने 6000 से अधिक महिलाओं और लड़कियों को साक्षर बनाया है, जिनमें से 85% से अधिक पहली पीढ़ी की शिक्षार्थी थीं। “आरंभ” परियोजना के प्रयास से 900 से अधिक बच्चों ने फिर से स्कूलों में दाखिले लिये हैं। ये बच्चे या तो स्कूल छोड़ चुके थे या उन्होंने कभी स्कूल में प्रवेश लिया ही नहीं था। आजीविका परियोजनाओं ने आय बढ़ाने के लिए 1500 से अधिक महिलाओं और युवाओं को प्रशिक्षित किया है। जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए क्षेत्र में पेयजल, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण स्तर पर मूलभूत सुविधाओं के विकास और खेल प्रोत्साहन पर अन्य परियोजनाएं भी शुरू की जा रही हैं।

ये परियोजनाएं उन समुदायों के सभी वर्गों के समग्र विकास की दिशा में काम करना जारी रखेंगी जिनके साथ हम काम करते हैं।

परियोजना क्षेत्र

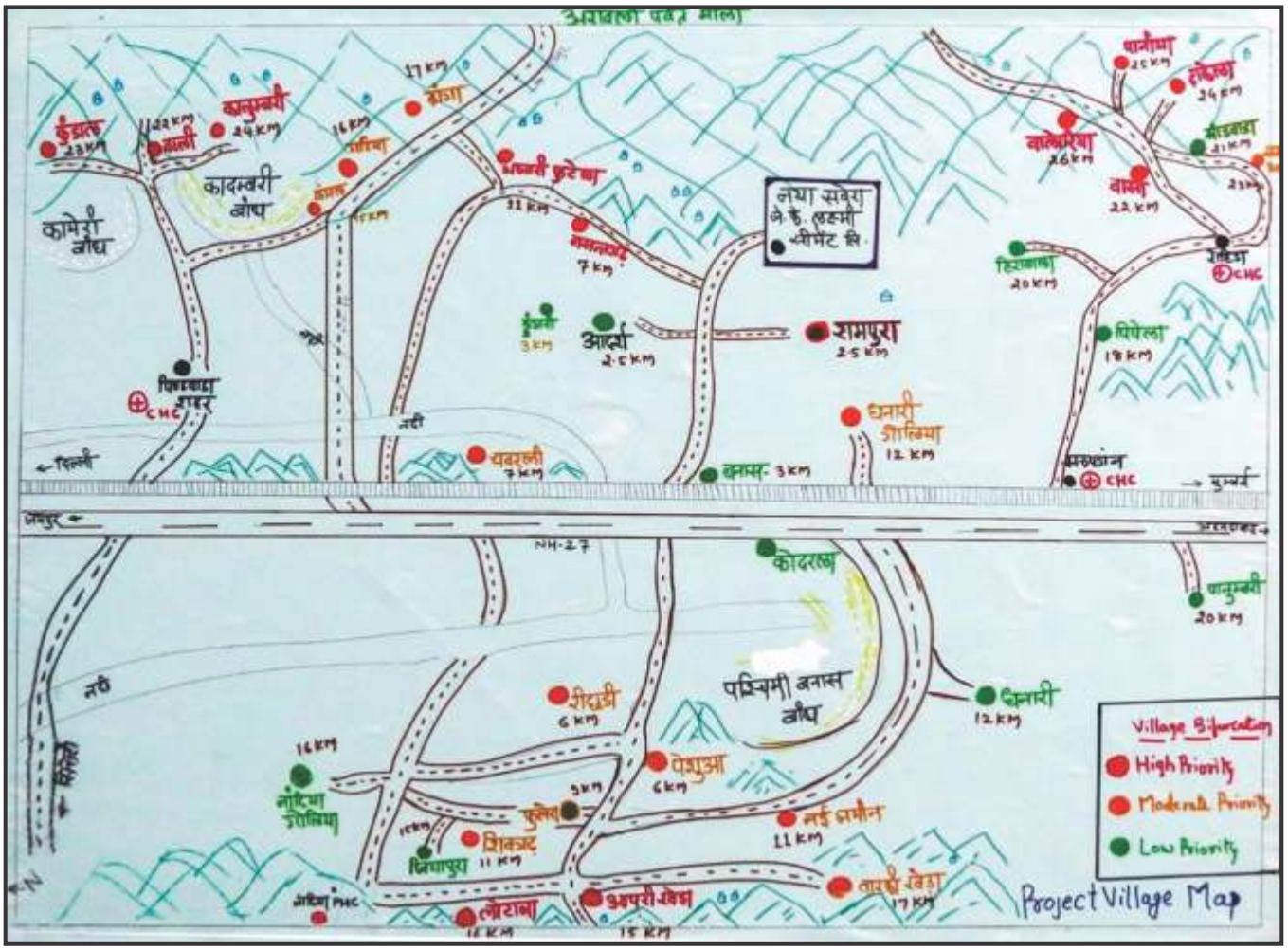

परियोजना का संचालन	राज्य	जिला	तहसील	गांव और फलियां	आबादी
2004	राजस्थान	सिरोही	पिंडवाड़ा	35 गांव 54 फलियां	80,000 (2021)

हमारे सीएसआर कार्य के प्रमुख क्षेत्र

- स्वास्थ्य, पानी और स्वच्छता
- शिक्षा
- आजीविका
- पर्यावरण
- समुदाय की आपातकालीन आवश्यकता का निस्तारण

सीएसआर परियोजनाओं का एक संक्षिप्त परिचय, जो उन समुदायों में जीवन परिवर्तन करने वाले बदलाव ला रहे हैं जिनके साथ हम काम करते हैं।

नया सवेरा परियोजना, 2004 का उद्घाटन

हमने नया सवेरा परियोजना के साथ अपनी सीएसआर यात्रा शुरू की। आज, हम 2004 में इस परियोजना के उद्घाटन के साथ शुरु हुई इस यात्रा को याद कर रहे हैं।

आरोग्य (स्वास्थ्य) - नया सवेरा परियोजना

“मैं मरने के लिए ही पैदा हुआ था, लेकिन कठिन चुनौतियों का सामना करने के बाद भी मैं बच गया …. और मैं अकेला नहीं हूं जिसका भाग्य एक एनीमिया, गरीबी से त्रस्त और वंचित गरासिया जाति की आदिवासी मां की कोख से जन्म लेने के बाद बदल गया है, बल्कि राजस्थान के सिरोही जिले के सबसे पिछड़े ब्लॉक में ऐसे हज़ारों अन्य लोग हैं।”

यदि आप पिंडवाड़ा प्रखंड के अधिकांश गांवों और फलियों में जाते हैं, तो आपको नवजात और उसकी मां के चेहरे पर आने वाली मुस्कान के पीछे छिपी यह कहानी तुरंत समझ में आ जाएगी। हमारी सामाजिक विकास परियोजनाएं राजस्थान के सबसे पिछड़े प्रखंड और जिले में महिलाओं और बच्चों के लिए काम करती हैं, जिसमें अन्य समुदायों के साथ गरासिया, भील और गमेती जैसे आदिवासी समुदाय रहते हैं।

सिरोही जिले को देश के 115 आकांक्षी जिलों में अल्प सुविधा श्रेणी में स्थान दिया गया है। नया सवेरा परियोजना के माध्यम से मां और बच्चे के जीवन को बचाने की जे के लक्ष्मी सीमेंट की अडिग प्रतिबद्धता को मुश्किल भूभाग, बिखरी हुई बस्तियों, आदिवासी समुदायों की विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों और अन्य चुनौतियों ने कम नहीं किया है। एक दशक से अधिक समय से, इस परियोजना ने इन समुदायों में लोगों के स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए लगातार काम किया है। नया सवेरा सर्वाधिक उपेक्षित एवं वंचित मां एवं शिशु के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास है, जो स्थानीय आवश्यकताओं, बेहतर क्रियान्वयन, साक्ष्य सूचनाओं एवं सद्भावना पर आधारित है।

इस परियोजना को अपने पिछले कार्यों के लिए कई पुरस्कार मिले हैं।

स्वास्थ्य (आरोग्य) - नया सवेरा परियोजना: माताओं और नवजात शिशुओं की जान बचाना

परियोजना के उद्देश्य:

प्रति 1000 जीवित जन्मों पर आईएमआर (शिशु मृत्यु दर) को 10 से कम करना

पहली तिमाही एएनसी पंजीकरण में सुधार करना

संस्थागत प्रसव में सुधार करना

मातृ मृत्यु दर को कम करना

परिवार नियोजन को प्रोत्साहित करना

प्रदत्त सेवाएं:

प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर पूर्ण जांच

प्रसव योजना की तैयारी

सामान्य बीमारियों के लिए चिकित्सकीय परामर्श एवं दवाएं

परिवार नियोजन परामर्श और साधन

सरकारी कर्मचारियों के सहयोग से नियमित टीकाकरण

बाल विकास संबंधित जांचें और निरिक्षण

किशोरों को जीवन-कौशल संबंधी शिक्षा

हितधारकों की बैठकें, सास-बहू सम्मेलन/महिला मंडल बैठकें, वीडियो शो, ग्राम स्वास्थ्य समिति की बैठकें

परियोजना का संचालन	राज्य	गांव और फलियां	पंजीकृत गर्भवती महिलाएं	पंजीकृत नवजात
2004 से	**80,000**	**35 और 54**	**30,000**	**30,079**

परियोजना कैसे नवजात शिशुओं और माताओं के जीवन को बचाती है

परियोजना क्षेत्र अलग-अलग फलियों तक फैला हुआ है

वीएलएम और एएनएम के द्वारा गृह संपर्क के माध्यम से प्रसव पूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल प्रदान की जाती है

वीएलएम होम बेस्ड न्यूबॉर्न केयर (घर पर की जाने वाली नवजात की देखभाल) सहित कई प्रकार की आरसीएच सेवाएं प्रदान करती हैं, जिसके लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है

परियोजना से संबंधित एएनएम द्वारा लाभार्थियों को देखभाल प्रदान करने के लिए घरों के दौरे किये जाते है

डॉक्टर मोबाइल क्लिनिक के माध्यम से चिकित्सकीय सेवाएं प्रदान करते है

सरकारी सेवा प्रदाताओं के साथ संपर्क रेफरल देखभाल सुनिश्चित करता है

केस स्टडी:

परियोजना क्षेत्र के एक गांव के फले की निवासी, 27 वर्षीय सीता देवी (बदला हुआ नाम), पत्नी - मंताराम भील (बदला हुआ नाम), अपनी गर्भावस्था के अंतिम महीने में थीं। उन्हें जुड़वां बच्चे होने वाले थे। उन्हें पूरी गर्भावस्था के दौरान एनीमिया था। परियोजना टीम ने उन्हें उचित इलाज के लिए सरकारी अस्पताल रेफर किया, लेकिन उनकी स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ। सीता और उनके परिवार के पास पर्याप्त वित्तीय संसाधन नहीं थे।

जुलाई, 2021 के उस भयानक दिन, जब भारी बारिश हो रही थी, सीता ने अपने पेट में दर्द की शिकायत की जो जल्द ही गंभीर हो गई। ऐसे में परियोजना की विलेज लेवल मोटिवेटर (वीएलएम), शांताबाई (बदला हुआ नाम) ने 108 डायल कर सरकारी एंबुलेंस को फोन किया। एम्बुलेंस आई और सीता को निकटतम सरकारी अस्पताल, पिंडवाड़ा में भर्ती कराया गया। शांताबाई सीता के साथ अस्पताल गईं। शांताबाई सरकार की आशा कार्यकर्ता भी थीं। अस्पताल में सीता की उचित देखभाल की गई, उन्हें खून भी चढ़ाया गया, और उन्होंने जुड़वा बच्चों को सुरक्षित जन्म दिया। प्रसव के बाद ही शांताबाई घर वापस आईं।

अगर वह स्थिति नहीं संभालतीं, तो हादसा हो सकता था। सीता और उनके दोनों बच्चे सामान्य रूप से विकसित हो रहे हैं।

एनीमिक गर्भवती मां

108 एम्बुलेंस को कॉल किया गया

सरकारी अस्पताल, पिंडवाड़ा में भर्ती करने के लिए ले जाया गया

सरकारी अस्पताल, पिंडवाड़ा में जुड़वां बालकों का जन्म

स्वास्थ्य (आरोग्य) - एचआईवी और सिलिकोसिस पर जागरूकता

परियोजना के उद्देश्यः

एचआईवी/एड्स पर जोखिम वाले समूहों (ट्रक चालकों) और सिलिकोसिस पर संगमरमर के कारीगरों में जागरूकता बढ़ाना

जोखिम वाले समूहों के जोखिम भरे व्यवहार को कम करना

प्रदत्त सेवाएंः

समुदाय में सिलिकोसिस पर जागरूकता कार्यक्रम

समुदाय में सिलिकोसिस पर जागरूकता कार्यक्रम

समुदाय में सिलिकोसिस पर जागरूकता कार्यक्रम

ट्रक चालकों के साथ एचआईवी/एड्स पर जागरूकता

परियोजना का संचालन	एचआईवी/एड्स पर जागरूकता कार्यक्रम	कार्यक्रमों में आए ट्रक चालकों की संख्या	सिलिकोसिस पर जागरूकता कार्यक्रम	कार्यक्रमों में आए लोगों की संख्या
2012 से	502	11,874	47	1,019

जल और स्वच्छता- स्वजल परियोजना: महिलाओं के कठिन परिश्रम को कम करने और उनकी गरिमा सुनिश्चित करने के लिए

परियोजना के उद्देश्य:

कारखाने के आस-पास के समुदायों में सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना

असुरक्षित/दूषित जल से जुड़ी जल जनित बीमारियों को कम करना

पानी की किल्लत वाले महीनों में जल संचय करने वाली महिलाओं की मेहनत को कम करना

गर्मियों में जल संग्रहण में होने वाले खर्च को कम करना

घरों और स्कूलों में शौचालयों के उपयोग को बढ़ावा देना

प्रदत्त सेवाएं:

टैंकर से जलापूर्ति

नए हैंडपंप

प्याऊ

स्कूल में शौचालय

घर में शौचालय

परियोजना का संचालन	गर्मियों में प्रतिदिन आपूर्ति किया गया औसत जल	जल व्यवस्था से लाभान्वित हुए लोग	व्यक्तिगत निर्मित शौचालय	बालिका विद्यालय के शौचालयों की मरम्मत/निर्माण
2014 से	**40,000 लीटर**	**20,000 सालाना**	**430**	**15**

पर्यावरण - पानी की बचत, पानी का भंडारण और वृक्षारोपण

परियोजना के उद्देश्य:

क्षेत्र के जल स्तर में सुधार करना

कृषि के लिए पानी की उपलब्धता में सुधार करना

क्षेत्र के हरित आवरण में सुधार करना

प्रदत्त सेवाएं:

मिनी परकोलेशन टैंक और एनीकट का निर्माण

समुदाय में और सरकारी स्कूलों के पास वृक्षारोपण

पशुओं के लिए पेयजल टंकियों का निर्माण (ओरु)

केस स्टडी:

परियोजना से जुड़े एक गांव में 8 मिनी परकोलेशन टैंकों (एमपीटी) का निर्माण किया गया। इससे गांव और उसके आसपास के क्षेत्र के भूजल में वृद्धि हुई है। एमपीटी निर्माण के बाद, हर गर्मी में सूखने वाले गांव के कुएं में पानी बढ़ता गया, और गर्मियों में इसका स्तर नीचे नहीं गिरा। इस कुएं से ग्रामीणों और उनके पशुओं को पीने का पर्याप्त पानी मिलता था। किसान सिंचाई के लिए पानी का उपयोग कर सकते थे। साथ ही, गांव में सभी एमपीटी के पास पशुओं के लिए पीने का पानी उपलब्ध कराया गया था।

परियोजना का संचालन	लाभार्थी आबादी	रोपित किए गए पौध	निर्मित मिनी परकोलेशन टैंक	लगाए गए हैंडपंप
2010 से	80,000	1,500	8	110

शिक्षा (विद्या) - परियोजना आरंभः बच्चों का वापस स्कूल में दाखिला

परियोजना के उद्देश्यः

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति परिवारों के वे बच्चे जो या तो स्कूल छोड़ चुके थे या कभी स्कूल नहीं गए थे, उनके नियमित अध्ययन के लिए उन बच्चों की सरकारी स्कूलों में प्रवेश में मदद करना

मध्यांतर आहार (मिड डे मील) के माध्यम से बच्चों के पोषण स्तर में सुधार लाने में मदद करना

बाल विवाह रोकना

प्रदत्त सेवाएंः

बच्चों को स्कूल में दाखिले के लिए प्रोत्साहन किया गया

माता-पिता के साथ वार्ता

स्कूल में नामांकित बच्चों को अध्ययन सामग्री प्रदान करना

केस स्टडीः

सुरेखा कुमारी (बदला हुआ नाम) गरासिया जनजाति से आती हैं। उसने दूसरी कक्षा में स्कूल की पढ़ाई छोड़ दी थी। इसके बजाय, वह बकरियों को चराने के लिए ले जाती थी। परियोजना आरंभ की टीम ने उसके माता-पिता को आश्वस्त किया और उसे स्कूल वापस आने के लिए प्रेरित किया। इसकी जानकारी स्कूल प्रबंधन को दी गई। उसे फिर से स्कूल में भर्ती किया गया, और अध्ययन सामग्री प्रदान की गई। सुरेखा ने अपनी स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली है। वह अन्य आदिवासी बच्चों के लिए एक रोल मॉडल है।

परियोजना का संचालन	लाभार्थी आबादी	कवर किए गए गांव	नामांकित आदिवासी बच्चे	नामांकित बालिकाएं
2008 से	**12,000**	**4 गांव और 15 फलियां**	**1045**	**585, 56%**

शिक्षा (विद्या) - नन्हें बच्चों के लिए आंगनवाड़ी केन्द्रों का विकास करना

परियोजना के उद्देश्यः

आंगनवाड़ी केन्द्रों में आधारभूत सुविधाएं सुदृढ़ करना

बच्चों को सीखने और आगे बढ़ने के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करना

पहले

बाद में

प्रदत्त सेवाएंः

भवनों की मरम्मत

इमारतों की रगांई-पुताई

प्री शिक्षा किट प्रदान किये गए

अन्य सामान प्रदान किये गए - बच्चों के बैठने वाली कुर्सियां, ऑफिस की कुर्सियां, वाटर कैंपर, वज़न मापने की डिजिटल मशीन और लंबाई मापने का स्टैंड

अन्य आंगनवाड़ी केन्द्रों को आवश्यकता-आधारित सहायता (फर्नीचर इत्यादि) प्रदान की गयी

केस स्टडीः

कार्य क्षेत्र में लिए गए आंगनवाड़ी केंद्रों को पहले एक नया रूप दिया गया; वहां के माहौल को बच्चों के अनुकूल और आनंदमय बनाने के लिए इमारतों की मरम्मत, रंगाई और भीतरी दीवारों को सजाया गया। बच्चों को लुभाने के लिए खिलौने और अन्य खेलने की चीजों को रखा गया। इन बदलावों से आंगनवाड़ी केंद्रों का परिवेश बदल गया, देखभाल करने वाले अधिक उत्साहपूर्वक काम करने लगे, अपनेपन की भावना बढ़ी, बच्चों की उपस्थिति में सुधार हुआ, और निश्चित रूप से उन्हें बहुत मज़ा आने लगा।

परियोजना का संचालन	लाभान्वित हुए कुल बच्चे	कवर किए गए गांव	कार्यक्षेत्र में ली गयी आंगनवाड़ी केन्द्रों की संख्या	आंगनवाड़ी केन्द्रों की संख्या जहां फर्नीचर प्रदान किये गए
2015 से	**700**	**3 गांव और 15 फलियां**	**5**	**38**

शिक्षा (विद्या) - उज्जवल प्रतिभाओं के लिए स्कूलों को सक्षम बनाना

परियोजना के उद्देश्य:

आस-पास के गांवों के स्कूलों में आधारभूत सुविधाओं (हार्डवेयर) और शिक्षण (सॉफ्टवेयर) में कमियों को दूर करना

नव कौशल (कंप्यूटर) सीखने का अवसर प्रदान करना

मेधावी छात्रों/खिलाड़ियों को आगे लाना और दूसरों को उनका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करना

आधारभूत सुविधाओं का सहयोग

फर्नीचर

कंप्यूटर + प्रिंटर

टिन शेड

पानी की टंकी

सॉफ्टवेयर (शिक्षण) संबंधित सहयोग

अतिरिक्त शिक्षक

प्रतिभा सम्मान अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए मेरिट छात्रवृत्ति

प्रतिभा सम्मान खिलाड़ियों (राज्य/राष्ट्र स्तरीय) का सम्मान

परियोजना का संचालन	लाभार्थी स्कूलों की संख्या	कवर किए गए गांव	स्कूलों की संख्या जहां पानी के स्टैंड लगाए गए	प्रतिभा सम्मान लाभार्थी संख्या
2013 से	**59**	**35 गांव और 54 फलियां**	**15**	**278**

शिक्षा (विद्या) - प्रौढ़ साक्षरता परियोजना: पढ़ना-लिखना सीखने में वयस्कों की मदद करना

परियोजना के उद्देश्य:

आसपास के आदिवासी क्षेत्र के गांवों में निरक्षरता उन्मूलन के लिए शिक्षा को प्रोत्साहित करना, अर्थात इन क्षेत्रों में निरक्षर महिलाओं और लड़कियों को शिक्षित करना।

प्रदत्त सेवाएं:

4 महीने के लिए प्रौढ़ साक्षरता केंद्र का संचालन

पाठ्यक्रम में शामिल थे:

स्वयं का नाम, पिता/पति का नाम, जाति और गांव का नाम लिख पाना, हिंदी अक्षरों की समझ, तीन अंकों तक का जोड़-घटा कर पाना

मोबाइल का उपयोग कैसे करना है, कैलेंडर कैसे पढ़ना है

भारत, राजस्थान, सिरोही जिले और पंचायत से संबंधित सामान्य ज्ञान जिसमें प्रशासन के सदस्यों जैसे मुख्यमंत्री और जिला कलेक्टर आदि के बारे में जानकारी

बच्चे की शिक्षा के बारे में जागरूकता

एक आदिवासी महिला बोर्ड पर अपना नाम लिखती हुई

केस स्टडी:

परियोजना क्षेत्र के एक गांव की 35 वर्षीय निरक्षर महिला, पुष्पा देवी गरासिया (बदला हुआ नाम) ने परियोजना संचालित साक्षरता केंद्र में दाखिला लिया था। वहाँ उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखा। फिर उन्होंने अपने घर में एक छोटी-सी दुकान शुरू की। वह प्रति माह औसतन 6500/- रुपये कमाती हैं। वह अपने व्यापार में हुई लाभ-हानि का लेखा-जोखा रख लेती हैं। वह आत्मनिर्भर हैं और क्षेत्र की अन्य महिलाओं के लिए एक आदर्श हैं।

परियोजना का संचालन	लाभार्थी आबादी	कवर किए गए गांव	लगाए गए प्रौढ़ साक्षरता केंद्रों की संख्या	प्रशिक्षित वयस्क/ (अनुसूचित जनजाति %)
2004 से	**80,000**	**35 गांव और 54 फलियां**	**287**	**5932/73%**

आजीविका - परियोजना आजीविका: युवाओं को कुशल बनाना

परियोजना के उद्देश्य:

युवाओं और कमजोर वर्ग के लोगों को कौशल उन्नयन और स्वरोजगार के अवसर प्रदान करना

स्थानीय युवाओं के आय के अवसरों में सुधार और उनके जीवन स्तर में सुधार करना

रोजगार और आय सृजन में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना

युवाओं और महिलाओं के व्यावहारिक कौशलों (आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, वित्त प्रबंधन) में सुधार करना

स्थानीय युवाओं और महिलाओं की समाज के सम्मानित और जिम्मेदार सदस्यों के रूप में छवि को सुधारना

यदि युवा अकुशल है, तो उसके पास कठोर, कम वेतन वाला, शारीरिक श्रम करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है

प्रदत्त सेवाएं: प्रस्ताव पर 6 व्यावसायिक कौशल कार्यक्रम

सिलाई

मोबाइल रिपेयर टेक्नीशियन

ब्यूटी टेक्नीशियन

केस स्टडी:

मनोहरी देवी (बदला हुआ नाम) और उनके पति आय के अवसरों की कमी के कारण परिवार के अन्य सदस्यों पर आर्थिक रूप से निर्भर थे। वे दोनों दिव्यांग हैं। परियोजना टीम ने मनोहरी देवी को सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया, जो उनके घर के बहुत करीब आयोजित किया गया था। अपने पक्के इरादों के बल पर उन्होंने तीन महीने का प्रशिक्षण पूरा किया, एक सेकेंड हैंड सिलाई मशीन खरीदी और घर पर ही छोटे-छोटे ऑर्डर पूरे करने लगीं। उनका व्यवसाय बढ़ता गया और जल्द ही उन्होंने जेकेएलसी सीएसआर की सहायता से एक नई स्वचालित सिलाई मशीन खरीदी। उन्होंने इसकी ईएमआई का भुगतान स्वयं की कमाई से करने का फैसला किया। मनोहरी देवी प्रति माह 3500-4000 रुपये कमा लेती हैं और अपने काम में व्यस्त रहती हैं।

परियोजना का संचालन	लाभार्थी आबादी	आज तक प्रशिक्षित प्रशिक्षुओं की संख्या	अब तक पूर्ण हुए प्रशिक्षण बैच	अपना काम शुरू कर चुके ट्रेनी
2013 से	**80,000**	**1350**	**78**	**70% से अधिक**

आजीविका - पशुओं की जीवन रक्षा

परियोजना के उद्देश्य:

पशुधन से किसानों की आय में सुधार करना

पशुओं में रोग और मृत्यु दर को कम करना

50% पशुधन का पूर्ण टीकाकरण बढ़ाना

पशुधन की रहने की स्थिति में सुधार करना

प्रदत्त सेवाएं:

पशुओं के रोगों और उनकी रोकथाम पर पशु पालकों के साथ जागरूकता सत्र

पशुओं का टीकाकरण

सरकारी योजनाओं से जुड़ाव

पशुओं के लिए पेयजल टंकियों का निर्माण (ओरु)

बीमारियों का घर-घर जा कर इलाज

केस स्टडी:

धनियालाल (बदला हुआ नाम) ने अपने छोटे डेयरी व्यवसाय के लिए अच्छी नस्ल की एक गाय खरीदी। वह मवेशियों की देखभाल और किसी भी बीमारी की रोकथाम के लिए हमेशा किशनलाल से सलाह लेते थे। किशनलाल ने आजीविका परियोजना में पशुधन सहायक के रूप में काम किया हुआ है। उस दिन, धनियालाल ने किशन को अपनी गाय की जांच करने के लिए बुलाया, क्योंकि लग रहा था कि उसे गर्भ संबंधित कोई समस्या है। किशन तुरंत वहां पहुंचे और जांच करने पर उन्हें लगा कि भ्रूण की हालत नाजुक है। उन्होंने मदद के लिए सरकारी एलएसए को बुलाया और दोनों ने सकुशल नवजात को जन्म दिया। धनियालाल के पास उन दोनों को धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं थे! अगर उनकी मदद न होती तो वह गाय और उसके बछड़े, दोनों को खो देता।

परियोजना का संचालन	लाभार्थी आबादी	जान बचाए गए पशुओं की संख्या	अब तक घर पर इलाज किए गए पशुओं की संख्या	अब तक टीकाकरण किए गए पशुओं की संख्या
2020 से	15,000	460	4,767	1,270

आजीविका - कृषि सुधार

परियोजना के उद्देश्य:

खेती के माध्यम से छोटे और मध्यम दर्जे के किसानों को बागवानी सहित उन्नत कृषि पद्धतियों के बारे में उनके ज्ञान में सुधार करके, उनकी आय में सुधार करना

खेती में प्रयुक्त किए गए साधनों की गुणवत्ता बढ़ाना

एक आदिवासी गांव में आजीविका के लिए दी जाने वाली मदद का एक मॉडल बनाना

प्रदत्त सेवाएं:

किसान समूहों के साथ चर्चा

आवश्यकतों का आंकलन और विश्लेषण (गैप एनालिसिस)

केवीके में एक्सपोज़र विजिट (पहली बार)

वर्मीबैड बनाना

उच्च गुणवत्ता वाले साधनों का निवेश - सब्जी के बीज, फल देने वाले पौधे और स्प्रे मशीन, सिंचाई, बिक्री/विक्रय

केस स्टडी:

काबरिया लाल गमेती (बदला हुआ नाम) ने परियोजना क्षेत्र के एक गांव में जैविक खेती पर प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण के बाद उन्हें परियोजना टीम द्वारा वर्मीकम्पोस्ट बैड बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। काबरिया लाल ने वैसा ही किया, और तीन महीने में वर्मीकम्पोस्ट तैयार हो गया। उन्होंने इसे अपनी मक्का की फसल में इस्तेमाल किया। पहले वह बहुत महंगे रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते थे। वह अब कम लागत वाले और सुरक्षित विकल्प पाकर खुश हैं। एक आदिवासी बहुल गांव में यह पहला मौका था जब किसी ने वर्मीकम्पोस्ट बैड तैयार किया और उसका उपयोग खेती में किया।

परियोजना का संचालन	लाभार्थी किसान	कवर किए गए गांव	प्रतिवर्ष उपलब्ध कराए गए बीजों की लागत	किसानों की संख्या जिन्होंने अधिक हुए उत्पादन से कमाई शुरू की
2015 से	**100**	**4 गांव और 15 फलियां**	**100,000**	**40**

संस्कृति - परियोजना मुस्कानः हमारे बुजुर्ग, हमारी पहचान

परियोजना का उद्देश्यः

बुजुर्गों (60 साल से ऊपर) के चेहरे पर मुस्कान लाना

प्रदत्त सेवाएंः

माल्यार्पण, श्रीफल और गमछा धरा कर सार्वजनिक रूप से बुजुर्गों का सम्मान किया गया

बुजुर्गों के लिए खेलों का आयोजन (चम्मच दौड़, बाल्टी में गेंद डालना और रिंग गेम आदि) किया गया

सरकारी योजनाओं की जानकारी दी गयी

केस स्टडीः

बड़े-बुजुर्ग दिन भर घर पर ही रहते थे, कुछ छोटे बच्चों की देखभाल करते थे और कुछ के पास वह जिम्मेदारी भी नहीं होती। उनका अधिकांश समय अकेले ही व्यतीत होता था। यह कार्यक्रम उन्हें घर से बाहर निकालकर, मजेदार खेलों के माध्यम से उनके जीवन में आनंद लाता है, और इस कार्यक्रम के माध्यम से हम बुजुर्गों के हमारे जीवन में महत्व को आदर देने के लिए सार्वजनिक रूप से हम उनका सम्मान करते हैं।

परियोजना का संचालन	लाभार्थी आबादी	कवर किए गए गांव	संचालित कार्यक्रम	बुजुर्ग भागीदारी
2013 से	**80,000**	**35 गांव और 54 फलियां**	**16**	**1,161**

आपातकाल के दौरान सामुदायिक आवश्यकताओं के लिए उठाए गए कदम - कोविड-19 से बचाव के प्रयास

परियोजना के उद्देश्य:

समुदाय में कोविड-19 महामारी के प्रभाव को कम करना

सीएचसीए पिंडवाड़ा में लगा ऑक्सीजन प्लांट

प्रदत्त सेवाएं:

कोविड-19 और कोविड उपयुक्त व्यवहार पर जागरूकता कार्यक्रम

संकट में फंसे लोगों को राशन किट वितरण

फ्रंटलाइन वर्कर्स के लिए पीपीई किट का प्रावधान

सीएचसी पिंडवाड़ा में भर्ती मरीजों के लिए ऑक्सीजन की उपलब्धता में सुधार

राशन किट

कोविड-19 पर सामुदायिक जागरूकता

क्षेत्र जहां फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं को पीपीई वितरित की गई	वितरित राशन किट	वितरित मास्क	कोविड-19 पर जागरूकता बैठकें	जागरूकता बैठकों में शामिल हुए व्यक्ति
12 पंचायत और 1 ब्लॉक सीएचसी	**2,300**	**7,000**	**224**	**6,152**

पुरस्कार और सम्मान

राष्ट्रीय स्तर सम्मान

टीवी टुडे नेटवर्क द्वारा "नया सवेरा" को 2012 में
आज तक केयर अवार्ड से सम्मानित किया गया

फिक्की द्वारा "नया सवेरा" को 2017 में
सम्मानित किया गया

राज्य स्तर सम्मान

स्वास्थ्य सेवा श्रेणी में राजस्थान सरकार के सीएसआर उत्कृष्टता पुरस्कार के लगातार दो बार विजेता

जे के लक्ष्मी सीमेंट की नया सवेरा परियोजना को 2017 और 2018 में यह पुरस्कार जीतने का सम्मान मिला था।

2017

2018

जे के लक्ष्मी सीमेंट, सिरोही इकाई को राजस्थान के नियोक्ता संघ द्वारा सीएसआर उत्कृष्टता ट्रॉफी–2021 से उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया

मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन योजना के तहत मिनी परकोलेशन टैंक के निर्माण के लिए जिला प्रशासन द्वारा जे के लक्ष्मी सीमेंट को सम्मानित किया गया

सरकारी साझेदारी

हमारे पूर्णकालिक निदेशक श्री एस के वली के साथ
प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम के दीक्षांत समारोह में उपस्थित हुए
जिला कलेक्टर एसके मित्तल जी

वृक्षारोपण अभियान में उपस्थित जिला कलेक्टर
शिल्पा शिंदे जी

जिला कलक्टेर सिद्धार्थ महाजन जी प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम
की गुरुकुल प्रणाली को समझते हुए

प्रतिभावान छात्रा को प्रतिभा सम्मान देते
जिला कलेक्टर श्रीराम मीणा जी

जिला, ब्लॉक और पंचायत के अधिकारी और पदाधिकारी हमेशा हमारी सीएसआर गतिविधियों के शुभचिंतक रहे हैं।

हम उनके सहयोग के लिए आभारी रहेंगे।

संपर्क संबंधित जानकारी

हमारे सीएसआर कार्य के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया हमारी वेबसाइट देखें
www.jklakshmicement.com/csr-at-jk-lakshmi-overview/

यू-ट्यूब पर हमारे सीएसआर कार्य का एक वृत्तचित्र देखने के लिए इस लिंक पर जाएं,
https://www.youtube.com/c/JKLakshmiCementLimited

पताः
जे के लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड
जेकेपुरम,
सिरोही,
राजस्थान - 307019

.....

जे के लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड

फरवरी/2022

यह ब्रोशर/विवरणिका केवल जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया है और इसका कोई भी भाग जे के लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड की अनुमति के बिना उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

ब्रोशर/विवरणिका में प्रस्तुत जानकारी सक्रिय गतिविधियों से संबंधित है और समय के साथ बदलती रहती हैं, नवीनतम जानकारी के लिए कृपया हमसे संपर्क करें।